INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in December 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

नई शिक्षा नीति 2020 तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान युग में प्रासंगिकता का अध्ययन

डॉ. रेवत सिंह, शोध निर्देशक, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविालय, केशव विधापीठ, जामडोली, जयपुर
मनोज कुमार मीणा, शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

उचित बुनियादी शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। सुखी जीवन जीने के लिए, भविष्य के सपनों को साकार करने के लिए तथा जीवन में आगे बढ़ने के लिए शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण तत्व है। 21वीं सदी में 1986 के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बदलाव जुलाई 2020 में हुआ, जिसे नई शिक्षा नीति 2020 के रूप में जाना गया।
34 वर्षों के बाद नई शिक्षा नीति को लागू किया गया नई शिक्षा नीति की प्रमुख बिंदुओं में शामिल है – मातृभाषा, शिक्षा तकनीकी, शिक्षा नवाचारी शिक्षा, कौशल शिक्षा, अध्यापक शिक्षा तथा छात्रों की शिक्षा इत्यादि। इन्हीं बातों का जिक्र कहीं न कहीं स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन में देखने को मिलता है। इसी उद्देश्य को लेकर प्रस्तुत शोध पत्र में नई शिक्षा नीति 2020 तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान युग में प्रासंगिकता का अध्ययन शोध पत्र को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावना :

सभ्यता, संस्कृति और विकास ही मनुष्य जाति की पहचान करते हैं। इन्हीं के आधार पर मानव जाति का मूल्यांकन किया जाता है तथा उनकी श्रेष्ठता का मापन किया जाता है। व्यक्ति के विचार, संस्कार तथा उसके अनुभव केवल वही नहीं होते जिन्हें वह स्वयं प्राप्त करता है, बल्कि वह स्वयं में अतीत के विचारों, संस्कारों, अनुभवों का एक केंद्र होता है। अतः व्यक्ति का निर्माण मात्र उसका निर्माण नहीं, बल्कि वह इतिहास की देन है एवं उन सभी महापुरुषों के विचारों का पुंज है जिन्हें उसने अपने संपूर्ण जीवन मैं पढ़ा है। हम भी इन महापुरुषों के चरण कमलों का अनुसरण व अनुगमन करके अपने देश व राष्ट्र के लिए उज्जवल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। इसी उद्देश्य को लेकर प्रस्तुत शोध पत्र में स्वामी दयानन्द सरस्वती के शिक्षा दर्शन तथा नई शिक्षा नीति 2020 का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

शिक्षा समाज में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में अपने ज्ञान का स्थानांतरण करने का प्रयास करती है। इन्हीं सब बातों को आधार मानकर हमारे महापुरूषों ने शिक्षा संबंधी अपने विचार प्रकट किए थे, जिनमें स्वामी दयानंद सरस्वती भी एक थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन नई शिक्षा नीति 2020 से मेल खाते हैं, अर्थात आपस में आपसी संबंध स्थापित करते हैं। किसी उद्देश्य को जानने हेतु शोध पत्र को प्रस्तुत किया गया।

अध्ययन का उद्देश्य :

- स्वामी दयानंद सरस्वती के शिक्षा दर्शन का नई शिक्षा नीति के संदर्भ में अध्ययन करना।
- स्वामी दयानंद सरस्वती के शैक्षिक दर्शन तथा नई शिक्षा नीति की समसामयिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
- स्वामी दयानंद सरस्वती के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, शिक्षक–छात्र संबंध,शिक्षक का स्वरूप, विद्यालय का स्वरूप तथा अनुशासन आदि का नई शिक्षा नीति के संदर्भ में अध्ययन करना।

नई शिक्षा नीति से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य :

भारतीय संविधान के अनुसार उचित बुनियादी शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। सुखी व समृद्धि जीवन जीने के लिए व शिक्षा की हम तथा महत्वपूर्ण भूमिका होती है। 21वीं सदी में 1986 के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बदलाव जुलाई 2020 में हुआ और यह नई शिक्षा नीति 2020 के रूप में सामने आई।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वामी दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती से जुड़े कार्यक्रमों में वर्चुअली हिस्सा लेते हुए बोले कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समाज सुधारक स्वामी दयानंद सरस्वती के दृष्टिकोण को आगे बढ़ा रही है।

मोरबी में उनके जन्मस्थान टंकारा में आयोजित स्वामी दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती समारोह पर

एक आभासी संबोधन में , मोदी ने दुनिया भर में आर्य समाज संस्थानों के व्यापक नेटवर्क को भी स्वीकार किया।

"भारतीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रणाली समय की एक बड़ी आवश्यकता है। आर्य समाज विद्यालय इसके प्रमुख केन्द्र रहे हैं। देश अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से इसका विस्तार कर रहा है। समाज को इन प्रयासों से जोड़ना हमारी जिम्मेदारी है," पीएम ने कहा, "2,500 से अधिक स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों और 400 से अधिक गुरुकुलों में छात्रों को शिक्षित करने के साथ, आर्य समाज आधुनिकता और मार्गदर्शन का एक जीवंत प्रमाण है।"

स्वामी दयानंद सरस्वती के शैक्षिक दर्शन तथा नई शिक्षा नीति 2020 में समानताएँ :

शोधार्थी ने नई शिक्षा नीति 2020 का विस्तृत अध्ययन करने के बाद पाया कि स्वामी दयानंद सरस्वती का शिक्षा दर्शन कहीं न कहीं नई शिक्षा नीति 2020 से मेल खाता है, जिनको निम्न बिंदुओं के आधार पर जाना जा सकता है –

- ❖ स्वामी दयानंद सरस्वती के अनुसार शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए वही नई शिक्षा नीति में भी मातृभाषा की बात कही गई है।
- ❖ स्वामी दयानंद सरस्वती ने कौशल आधारित शिक्षा को अपनाने पर बल दिया वहीं नई शिक्षा नीति में भी तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है।
- ❖ स्वामी दयानंद सरस्वती एक धर्म की शिक्षा प्रदान करने की पक्षधर नहीं थे तथा नई शिक्षा नीति में भी धर्म निरपेक्षता पर जोर दिया गया है।
- ❖ स्वामी दयानंद सरस्वती ने अध्यापकों की शिक्षा पर जोर दिया, वही नई शिक्षा नीति में भी अध्यापक शिक्षा के महत्व को उजागर किया गया है।
- ❖ स्वामी दयानंद सरस्वती में व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया, वहीं नई शिक्षा नीति में भी छठवीं कक्षा से बालक को प्रोफेशनल व व्यवसाय आधारित शिक्षा देने की बात कही ताकि बालकों को अच्छे रोजगार के सुअवसर मिल सके।
- ❖ स्वामी दयानंद सरस्वती ने छात्र जीवन में शिष्टाचार तथा अनुशासन पर बल दिया, वहीं नई शिक्षा नीति के तहत अब विद्यार्थियों को शिष्टाचार व अनुशासन के अलग से अंक प्रदान किए जाएंगे।
- ❖ स्वामी दयानंद सरस्वती ने स्वराज तथा राष्ट्रीय शिक्षा पर बल दिया, वहीं नई शिक्षा नीति में एकीकृत शिक्षा प्राप्त करने की बात कही हुई।
- ❖ स्वामी दयानंद सरस्वती तत्कालीन सरकार को शिक्षा पर सरकारी सहायता प्रदान करने की बात कही। सही बात नई शिक्षा नीति है जिसके अंतर्गत शिक्षा के क्षेत्र में सकल घरेलू उत्पाद के 6 प्रतिशत हिस्से को शिक्षा पर खर्च करने का लक्ष्य रखा।

स्वामी दयानंद सरस्वती के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान युग में प्रासंगिकता :

नई शिक्षा नीति 2020 का विस्तृत अध्ययन करने के बाद शोधार्थी में पाया कि स्वामी दयानंद सरस्वती शैक्षिक विचार निश्चित रुप से नई शिक्षा नीति 2020 से मेल खाते हैं तथा उनके शिक्षा दर्शन की वर्तमान युग में बहुत उपादेयता एवं प्रासंगिकता है, जिनको निम्न बिंदुओं के आधार पर जाना जा सकता है –

- ❖ स्वामी दयानंद सरस्वती का शैक्षिक दर्शन जितना प्रासंगिक उन्नीसवी सदी में था, उतना ही वर्तमान में है। चाहे विज्ञान तथा तकनीकी कितनी ही उन्नति क्यों न कर ले। मनुष्य के धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के भाव वही रहेंगे जो अनादि काल से चले आ रहे हैं।
- ❖ स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा सर्व जन व जनसाधारण को प्रदान की गई शिक्षा परी–पाटी को अपनाने से 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना का विकास होगा।
- ❖ स्वामी दयानंद सरस्वती के शिक्षा दर्शन द्वारा पाश्चात्य शिक्षा के स्थान पर भारतीय शिक्षा तथा सभ्यता व संस्कृत का विकास होगा।
- ❖ स्वामी दयानंद सरस्वती के शैक्षिक दर्शन का अनुशीलन करने से सामाजिक कुरीतियों का पतन होगा तथा श्रेष्ठ समाज की स्थापना होगी।
- ❖ स्वामी दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना बताया जो आज भी प्रासंगिक है।
- ❖ स्वामी दयानन्द सरस्वती के शिक्षा दर्शन से बालकों में देश–प्रेम व देश हित की भावना का विकास होगा।

- स्वामी दयानन्द सरस्वती सभी धर्म को शिक्षा प्रदान करने के पक्षधर थे। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भी सभी वर्गों को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा प्रदान की जा रही है, अतः इनके यह विचार भी वर्तमान में प्रासंगिक है।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन का अनुशीलन करने से सामाजिक कुरीतियों का पतन होगा वह श्रेष्ठ समाज की स्थापना होगी।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन से व्यक्ति कर्म के प्रति प्रवृत्त होगा, जिससे वह आत्मनिर्भर बन सकेगा।
- स्वामी दयानंद सरस्वती की शिक्षा द्वारा वैदिक शिक्षा का प्रचार प्रसार होगा वह भारत फिर से विश्व गुरु बनेगा।
- बच्चों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराना राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रमुख लक्ष्य रखा गया है, इसी कार्य हेतु स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया।

निष्कर्ष :

नई शिक्षा नीति 2020 तथा स्वामी दयानंद सरस्वती के शैक्षिक दर्शन का विस्तृत अध्ययन करने के बाद यह कहा जा सकता है कि हमारे समाज और पूरे देश के सर्वांगीण विकास में नई शिक्षा नीति 2020 तथा स्वामी दयानंद सरस्वती के शैक्षिक दर्शन का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। हालाँकि, इस नीति का कार्यान्वयन इसकी सफलता को काफी हद तक निर्धारित करेगा। बहरहाल, युवा प्रधान आबादी वाला भारत इस शिक्षा नीति के उचित कार्यान्वयन से वास्तव में एक बेहतर स्थिति हासिल कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- डॉ. अवस्थी ए., डॉ. अवस्थी आर. के. ''भारतीय राजनीतिक चिंतन'' रिसर्च पब्लिकेशंस, जयपुर, संस्करण 2018
- www.indianexpress.com
- सिंह बी. के. ''स्वामी दयानन्द '' नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली, संस्करण 2004
- www.linkedin.com
- कुमार श्री ए. के. ''महान व्यक्तित्व दयानन्द सरस्वती'' चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, संस्करण 2002
- www.dp.samachar.com
- वर्मा श्री राम ''भारतीय राजनीतिक विचारक'' कॉलेज बुक सेंटर, जयपुर, संस्करण 2019
- डॉ. चतुर्वेदी श्याम मधुकर, डॉ. चतुर्वेदी मीनाक्षी ''प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक'' कॉलेज बुक हाउस, जयपुर, संस्करण 2021
- डॉ. जैन पुखराज ''भारतीय राजनीतिक विचारक'' साहित्य भवन पब्लिकेशंस, आगरा, संस्करण 2012

ADVANCED SCIENCE INDEX